स्वामी विवेकानन्द राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लोहाघाट (जिला - चम्पावत) उत्तराखंड।

दो दिवसीय राष्ट्रीय वेबीनार

उद्घाटन सत्र - 26 अगस्त 2021 (दिन-गुरुवार) समय – प्रातः - 11:00 से अपरान्ह - 12:30

समापन सत्र - 27 अगस्त 2021 (शुक्रवार) समय – सायं - 06 :00 से 8:00 बजे तक

(विभिन्न तकनीकी सत्र देश की विभिन्न संस्थाओं में 26 अगस्त 2021 के अपरान्ह 12:30 बजे से लेकर 27 अगस्त 2021 में सायं 06:00 बजे से पूर्व तक)

विषय - *" भारत में लोकतांत्रिक मूल्यों की सफलताएँ, चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ "*

आयोजक संस्था

राजनीति विज्ञान विभाग, स्वामी विवेकानन्द राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लोहाघाट (चम्पावत)

Collaboration with

Advaita Ashrama, Mayawati, Ramakrishna Ashram, Lohaghat, Distt-Champawat, Uttarakhand, India.

&

Human Rights Promotion and Research Organization, Patna, Bihar, India.

कॉन्सेप्टुअल नोट्स (Conceptual Notes) :

यदि हम अतीत की पगडंडियों का इतिहास की दूरबीन से विहंगम दृष्टिपात करें तो पाते है कि कोई भी समाज छल - कपट, मूल्यहीनता, घुंघरुओं व तलवारों के बल पर अधिक समय तक टिक नहीं पाया है तथा उस समाज में फैली गंध और सड़ान से उसे निकालने के लिए समय-समय पर इस धरती पर अनेक अवतारी पुरुषों, सीता माता जैसे आदर्शी, अनेक विदुषियों, सिद्ध पुरुषों व भारत देश में अनेक ज्ञात और अज्ञात शहीदों ने, मानव जाति में जन्म लेकर समाज का भार अपने कंधों पर उठाकर भारत की धरती को महान बनाने के लिए अपने प्राणों तक को न्यौछावर किया है।

मानव जाति का इतिहास जितना पुराना है उतनी ही पुरानी लोकतांत्रिक प्रणाली है जैसे-जैसे इंसान ने अपने आंतरिक गुणों का विकास किया, वैसे-वैसे वह पशुओं से अलग होकर दिखने लगा और वह मनुष्य के रूप में बुद्धिवान, विवेकी, संयमी, धीर, अनुशासित, संवेदनशील, अहिंसक, परहित के साथ - साथ लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रखने के लिए एक सभ्य समाज की ओर बढ़ता ही गया। परंतु, पश्चिमी देशों ने, विशेष तौर पर प्राचीन ग्रीक विचारकों, जिसमें प्लेटों का नाम प्रमुख है आया जिन्होंने बताया कि यदि मनुष्य में नैतिक और आदर्श गुण विकसित करने है तो समाज में कठोर से कठोर दंड का प्रावधान होना अति आवश्यक है जिसका प्लेटो ने अपनी पुस्तक-"उप-आदर्श राज्य के सिद्धांत में" सविस्तार वर्णन किया है।

स्वामी विवेकानन्द जी ने अपनी पुस्तक 'नया भारत गढ़ो' में लिखा कि हमारा पवित्र भारतवर्ष धर्म एवं दर्शन की पुण्य-भूमि है। यहीं बड़े-बड़े महात्माओं तथा ऋषियों का जन्म हुआ है, यही संन्यास एवं त्याग की भूमि है तथा – केवल यहीं आदि काल से लेकर आज तक मनुष्य के लिए जीवन के सर्वोच्च आदर्श एवं मुक्ति का द्वार खुला हुआ है। संसार, भारत देश का अत्यंत ऋणी है यदि भिन्न-भिन्न देशों की पारस्परिक तुलना की जाए तो मालूम होगा कि सम्पूर्ण संसार सहिष्णु एवं निरीह भारत का जितना ऋणी है उतना और किसी देश का ऋणी नहीं है।

आज के लोकतांत्रिक समाज में विश्वव्यापी कोरोना महामारी व कटरपंथी शक्तियों के भयावह वातावरण में स्वामी विवेकानन्द जी का दर्शन व उनका बहुआयामी विशाल व्यक्तित्व अत्यंत प्रासंगिक हो गए है, विवेकानन्द जिसने सारे सांसारिक बंधनों को तोड़ कर स्वयं को बंधन मुक्त कर दिया था परन्तु, उनका एक ही प्रेम था, उनका देश और एक ही शोक था उनके देश का पतन।

स्वामी विवेकानन्द जी ने अपने एक पत्र में मद्रास के एक शिष्य को लिखा था कि मैं, भारत देश में ऐसे युवाओं को देखना चाहता हूँ जिनकी नसें इस्पात की तरह बनी होनी चाहिए और माँसपेशियाँ लोहे के जैसे बनी होनी चाहिए उनका यह पहला संदर्भ - मानव के रोग प्रतिरोधक शक्ति को शक्तिशाली बनाने के लिए था जिसमें आज कोरोना विश्वव्यापी बीमारी ने हमें अहसास करवा दिया कि हम कितने सशक्त और मजबूत है। दुसरा संदर्भ – भारत देश के प्रत्येक नागरिक को भारत माता की रक्षा के लिए अपनी सशक्त और मजबूत भुजाओं को हमेशा तैयार रखना चाहिए।

अल्बर्ट आइंन्सटीन ने अपनी 'सामाजिक सरोकार' नामक पुस्तक में लोकतांत्रिक मूल्यों के संदर्भ में कहा कि आज इंसान समाज के ऊपर अपनी निर्भरता को एक सकारात्मक गुण के रूप में, एक जीवंत के रूप में, एक रक्षक के रूप में महसूस नहीं करता है, बल्कि इसे अपने प्राकृतिक अधिकारों, यहाँ तक कि अपने आर्थिक अस्तित्व के लिए भी खतरे के रूप में महसूस करता है। समाज में इंसान की स्थिति ऐसी है कि उसकी मानसिक संरचना में निहित स्वार्थी प्रवृत्तियॉ निरंतर प्रबल होती जा रही हैं जबकि उसकी सामाजिक प्रवृत्तियों का, जो स्वभाव से ही कमजोर हैं क्षरण तेज गति से हो रहा है। अधिकांश लोग चाहे समाज में उनका जो भी स्थान हो, क्षरण की इस प्रक्रिया के शिकार हैं। अनजाने ही अपने स्वार्थों के कैदी बने हुए है, वे स्वयं को अरक्षित, एकाकी तथा जीवन के सहज, सरल, व निष्कपट आनन्द से वंचित महसूस कर रहे हैं। इस जीवन में खुद को समाज के प्रति समर्पित करके ही वह सार्थकता पा सकता है।

जर्मनी में - फ्रैंकफर्ट विश्वविद्यालय के समकालीन, समाज विज्ञान में रहे प्रोफ़ेसर जुरगेन हैबरमास ने अपनी पुस्तक - Communicative Action में लिखा कि लोकतांत्रिक मूल्य वहीं ज्यादा विकसित हो सकते है जहाँ पर चर्चा, विमर्श और निर्णय बिना किसी प्रभुत्व, शक्ति व किसी बाहरी दबाव के हो।

75 वर्ष पूर्व जब भारत देश स्वतंत्र हुआ था तो उस समय कई शक्तिशाली देशों व लोगों को संशय हुआ कि भारत में लोकतंत्र सफल भी हो पाएगा या नहीं, ऐसे लोग इस तत्व से अनभिज्ञ थे कि प्राचीन काल में भारत में लोकतंत्र इसी भारत भूमि में पुष्पित, पल्लवित और समृद्ध हुआ था। आज एक शक्तिशाली लोकतंत्र बनाने के लिए आधुनिक भारत में भी भारत बिना किसी भेद-भाव के वयस्क मताधिकार देने में पश्चिमी देशों से आगे रहा है, हमारे संविधान निर्माताओं ने जनता के विवेक में अपनी आस्था व्यक्त करते हुए संसद को लोकतंत्र का मंदिर मानते हुए जहाँ पर वाद-विवाद, चर्चा, विमर्श और अभिव्यक्ति को व्यक्त करने का एक सर्वोच्च मंच मिला है।

आज लोकतांत्रिक मूल्यों में पर्यावरण की चुनौतियों के संदर्भ में गाँधी जी का यह अनुभव बहुत ज्यादा प्रासंगिक है कि 'प्रकृति के अनुरूप जीवन जीने की कला सीखने का प्रयास करना चाहिए यदि एक बार जब आप नदियों व पहाड़ों तथा पशु–पक्षियों के साथ अपना संबंध बना लेते है तब प्रकृति अपने रहस्यों को आपके सामने प्रकट कर देती है, इस तरह प्रगति व विकास के पथ पर धीरे-धीरे ही हमें आगे बढ़ना चाहिए।

भारतीय संविधान की प्रस्तावना में स्पष्ट लिखा है कि बिना आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्वतंत्रता व समानता के लोकतांत्रिक मूल्यों को सफल नहीं बना सकते है आज लोकतांत्रिक मूल्य का संदर्भ पर्यावरण और आर्थिक क्षेत्र में प्रमुख को गए है।

21वीं शताब्दी में जहाँ प्रभुत्वसंपन्न समाजवादी पंथ निरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य भारत अपनी स्वतंत्रता की 75वीं वर्ष गांठ बना रहा है वही भारत देश में "लोकतांत्रिक मूल्यों की सफलताएँ, चुनौतियाँ, एवं संभावनाएँ" पर राष्ट्रीय विचार-विमर्श की परम आवश्यकता को महसूस किया गया है और इस विचार के संदर्भ में देश के विभिन्न संस्थानों/ महाविद्यालय/ विश्वविद्यालयों में चर्चा हो, जिसके लिए दो दिवसीय नेशनल वेबीनार का एक छोटा सा भगीरथ प्रयास राजनीति विज्ञान विभाग, स्वामी विवेकानन्द राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लोहाघाट जिला – चम्पावत उत्तराखंड द्वारा किया जा रहा है, जिसमें देश के प्राध्यापक वर्ग, बुद्धिजीवी वर्ग तथा शोध - छात्र इस राष्ट्रीय वेबीनार के 28 उप -विषयों में वर्णित विभिन्न विषयों पर अपनी-अपनी विचार शक्ति के साथ शोध पत्र प्रस्तुत करेंगे, जो उच्च शिक्षा के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होगा।

डा. संगीता गुप्ता जी, प्राचार्य/अध्यक्ष वेबीनार, का विशेष धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने, मुझे अकादमिक कार्य करने की पूर्ण स्वतंत्रता देते हुए इस राष्ट्रीय वेबीनार के उदेश्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका व सहयोग दिया है।

प्रोफेसर पुष्पेश पंत जी (पूर्व- हेड, स्कूल ऑफ इंटेरनेशनल ईस्टडीज एवं डीन) जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली, विशिष्ट मुख्य अथिति / कुलपति, महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार, प्रोफेसर संजीव कुमार शर्मा जी व कुलपति, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय अल्मोड़ा, प्रोफेसर नरेंद्र सिंह भण्डारी जी का मैं आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने राष्ट्रीय वेबीनार के उद्घाटन सत्र व समापन सत्र में मुख्य अथिति के रूप में अपनी सहभागिता देने की सहर्ष स्वीकृति प्रदान किया है। प्रोफेसर एम. एम.

सेमवाल जी, हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर, प्रोफेसर नीता बोरा शर्मा जी, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल, डॉ. सुधीर सिंह जी, दयाल सिंह कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली/ डा. माधुरी सुखिजा जी, माता सुंदरी कालेज फॉर वुमेन-दिल्ली केन्द्रीय विश्वविद्यालय, दिल्ली का भी हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने राष्ट्रीय वेबीनार के उद्घाटन सत्र व समापन सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में अपनी सहभागिता देने की सहर्ष स्वीकृति प्रदान किया है।

कुलपति हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल केन्द्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर, प्रोफेसर अन्नपूर्णा नौटियाल जी, / कुलपति, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, प्रोफेसर ओ. पी. एस. नेगी जी, / कुलपति, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल, प्रोफेसर के. एन. जोशी जी, / कुलपति, दून विश्वविद्यालय, देहरादून, प्रोफेसर सुरेखा डँगवाल जी, / एवं स्वामी नरसिम्हानंदा जी (पूर्व संपादक, प्रबुद्ध भारत) वर्तमान में अध्यक्ष-रामाकृष्णा आश्रम, कोझिकोड, केरल, का विशेष धन्यवाद देता हूँ जिनके शुभ-संदेश, सहयोग और बौद्धिक विमर्श के बिना यह राष्ट्रीय वेबीनार संभव नहीं हो सकता है।

मैं, एक बार पुनः स्वामी शुद्धिदानन्दा जी अध्यक्ष, अद्वैत आश्रम, रामकृष्ण मिशन, लोहाघाट, जिला-चम्पावत, उत्तराखंड का हार्दिक व आत्मिक धन्यवाद देना चाहता हूँ, साथ ही डा. नरेश कुमार सिंह जी, सचिव, Human Rights Promotion and Research Organization, Patna (Bihar) व विभागाध्यक्ष राजनीति विज्ञान विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बिहार का धन्यवाद, राष्ट्रीय वेबीनार के उद्घाटन सत्र व समापन सत्र में विशिष्ट अथिति के रूप में अपनी सहभागिता देने की सहर्ष स्वीकृति प्रदान किया साथ ही साथ जिन्होंने संयुक्त रूप में इस राष्ट्रीय वेबीनार में हमें अपने सहयोग के तौर पर लोगो (LOGO) बैनर, (Banner) और अपनी संस्थाओं का नाम इस राष्ट्रीय वेबीनार में संयुक्त तौर पर राजनीति विज्ञान विभाग, स्वामी विवेकानन्द राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लोहाघाट जिला – चम्पावत उत्तराखंड को दिया है।

देश के विभिन्न संस्थाओं में कार्यरत, प्राध्यापक वर्ग, बुद्धिजीवी वर्ग तथा शोध – छात्रों द्वारा राष्ट्रीय वेबीनार में बौद्धिक विमर्श व अपने-अपने शोध पत्रों के माध्यम से अकादमिक क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए आप सभी का हार्दिक अभिनंदन और आभार व्यक्त करते हैं।

धन्यवाद।

P.Lakhera 22-08-2021

(डा. प्रकाश लखेड़ा)
आयोजक सचिव/ विभागाध्यक्ष
राष्ट्रीय वेबीनार/राजनीति विज्ञान विभाग

(डा० प्रकाश लखेड़ा)
असिस्टेंट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लोहाघाट
जिला – चम्पावत

Sangita 22.08.2021

(डॉ. संगीता गुप्ता)
प्राचार्य/ अध्यक्ष वेबीनार
स्वामी विवेकानन्द राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
लोहाघाट (चम्पावत) उत्तराखंड।

प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
लोहाघाट (चम्पावत)